

भाग-2, सं.-1, जनवरी-जून 2016

शोध-पत्रिका (नई श्रृंखला)

इतिहास



- मुगलकालीन बुन्देलखण्ड के प्रमुख सन्तों एवं कवियों का धार्मिक चिन्तन
बी.के. श्रीवास्तव 102
- कानपुर में 1857 का महासमर
जे.पी. मिश्र 116
- महात्मा गांधी की समाजवादी दृष्टि
गिरिजाशंकर 124

पुस्तक समीक्षा

- सच्चिदानन्द सहाय, भद्रेश्वर : ए फारगाटेन फार्म ऑफ शिव
इन इण्डिया एण्ड साउथ ईस्ट एशिया
हरिनारायण दूबे 134
- हरिहर सिंह, मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी एवं कमल गिरि
जैन आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर (इन्साइक्लोपीडिया ऑफ जैन
स्टडीज, वॉल्यूम 1)
सीताराम दूबे 136
- हीरालाल पाण्डेय, इस्लाम और उसकी सम्प्रभुता का प्रबंधन -
भारतीय परिदृश्य 1526 ई. तक
दीनबन्धु पाण्डेय 142
- सत्यजीत वधवा, आखरी लम्हे दी दासता, लाहौर दरबार दा चढ़ दा ते
हुवदा सूरज (पंजाबी अनुवाद)
कुलदीप कौर धालीवाल 145

श्रद्धाञ्जलि

- श्रीराम गोयल (1932-2015 ई.) 151
दयानाथ त्रिपाठी
- मालती जे. शेण्ङ्गे (1934-2015 ई.) 154
ईश्वर शरण विश्वकर्मा

मुगलकालीन बुन्देलखण्ड के प्रमुख संतों एवं कवियों का धार्मिक चिन्तन

बी.के. श्रीवास्तव*

मध्ययुगीन बुन्देलखण्ड का धर्म लोकधर्म था। बुन्देलखण्ड के लोक कवि ईसुरी ने इस लोक धर्म के बारे में कहा है।

दीपक दया धरम को जारौ, सदा रात उजयारौ।
धरम करें बिन करम खुलै ना, बिना कुची ज्यौ तारौ।।
समझा चुके करै न रइयौ, दिया तरैं अँदयारौ।
कात 'ईसुरी' सुन लो प्यारी, लग जै पार निवारौ।।'

ईसुरी कहते हैं कि धर्म में दया का भाव आवश्यक है। हर एक को दया धर्म रूपी दीपक से उजाला करना चाहिये। जिस प्रकार बिना चाबी के ताला नहीं खुलता, उसी प्रकार दया धर्म किये बिना किस्मत भी नहीं खुलती। इस दया धर्म के ज्ञान रूपी दिये के नीचे अज्ञान रूपी अंधेरा नहीं रहना चाहिये। यदि आप ऐसा करेंगे तो आपकी जीवन रूपी नैया भवसागर पार कर जायेगी।

मध्यकालीन भारत में सगुण एवं निर्गुण भक्ति की जो धारा बह रही थी, बुन्देलखण्ड भी उससे प्रभावित हुए बिना न रहा। जिस समय मुगल सम्राट अकबर (1556-1605 ई.) में विभिन्न धर्म मतावम्बियों से विभिन्न धर्मों की जानकारी ले रहा था, उस समय बुन्देलखण्ड

* आचार्य, इतिहास विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर- 470003, म.प्र.,
shribk2000@gmail.com

1. नर्मदा प्रसाद गुप्त, बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति का इतिहास, (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995), पृ. 124